

2023 में वर्ल्ड लेबल पर चर्चा के केंद्र में रहा भारत

साल 2023 भारतीय डिलामोसा के लिहाज के बहद खास वर्ष रहा। इस साल भारत ने दुनिया की 20 बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के समूह जी-20 और शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गानाइजेशन की अध्यक्षता की। जी 20 समिट के दौरान तमाम राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष भारत पहुंचे, पूरे साल विश्व में चर्चा का केंद्र भी भारत बना रहा। खास बात ये रही कि इन इवेंट्स के अलावा भी भारत में इस साल जर्मनी, इटली सहित 7 बड़े देशों के नेता नई दिल्ली पहुंचे। इन नेताओं का भारत दौरे पर आना साफ संदेश देता है कि भारत के साथ विदेशों के रिश्ते तेजी से बढ़ रहे हैं। इस साल की शुरुआत में सबसे पहले भारत पहुंचने वाले नेता थे जर्मनी के चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़। वह दो-दिवसीय यात्रा पर भारत आए थे। चांसलर स्कोल्ज़ की यह यात्रा इसलिए भी खास थी, क्योंकि उनकी 2021 में जर्मनी का चांसलर बनने के बाद वह पहली बार भारत आए थे। इतना ही नहीं स्कोल्ज़ पहले किसी अन्य देश के मंत्री है, जिहोने भारत में स्टैंड-अप नियंत्रण की है। जर्मन चांसलर के यात्रा के दैग्न उनकी और प्रीमिं

स्टडिलान यात्रा का हजमन चासल के यात्रा के दौरान उनका आर पाइम मोदी के बीच कई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय मुद्दों, क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विषय पर चर्चा हुई। साथ ही जर्मनी ने हरित और सतत विकास में साझेदारी को लेकर भारत में अपने विकास सहयोग के तहत 10 बिलियन की नई और अतिरिक्त प्रतिबद्धता को सहमति दी। साथ ही हरित हाईड्रोजन में सहयोग की बात की गई। इसके अलावा भी कई पहलुओं पर समझौता हुआ और हस्ताक्षर किए गए। इस यात्रा के दौरान जर्मनी के चांसलर ओलाफ स्कोल्ज ने कहा कि भारत ने काफी तरकी की है और यह दोनों देशों के बीच संबंधों के लिए बहुत अच्छा है। उन्होंने कहा कि पिछली बार जब मैंने भारत का दौरा किया था तब से अब तक बहुत कुछ बदल गया है। यह देश वास्तव में विकास कर रहा है। 2 से 3 मार्च को इटली की प्रधानमंत्री जियरोजिया मिलोनी भारत पहुंची थी। यह यात्रा दोनों देशों के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह जियरोजिया की पहली आधिकारिक यात्रा थी। इस दौरान भारत-इटली संबंधों को रणनीतिक साझेदार के तौर पर बढ़ाने की बात की गई। दोनों देशों के बीच आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो भारत इटली स्टार्टअप ब्रिज की घोषणा की गई, प्रवासन और गतिशीलता पर घोषणा की गई। साथ ही ये भी तय किया गया कि दोनों देश मिलकर संयुक्त सैन्य अभ्यास को रेगुलर करने की कोशिश करेंगे। यात्रा के दौरान उन्होंने कहा कि भारत के पृथग्नमंत्री ने दो मोदी जिस

चुनाव भाजपा ने मोदी जी के चेहरे पर लड़ा और वहां के मतदाताओं ने मोदी जी की गारंटी पर भरोसा दिखाया

मोदी जी की गारंटी में ढम है

हार और जोत तो चुनाव के अंग हैं,
लेकिन हालिया विधानसभा

नुनावों में जिस तरह से कांग्रेस को मुंह की खानी रही है, वह उसके लिए खतरे की ओरी है। मोदी ने गारंटी के दम पर भाजपा ने हिंदी पट्टी के तीन राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के बधानसभा चुनाव में प्रचंड जीत हासिल की है। इहीं कांग्रेस के खाते में सिर्पदक्षिण का एक राज्य ललंगाना आया है। भाजपा ने कांग्रेस को दो राज्यों में सत्ता से बेदखल कर दिया, जबकि एक राज्य में वह सत्ता-विरोधी लहर की आशंका के बीच सफल रही, बल्कि एक बड़ी कांग्रेस ने जीती उसने हासिल की। दक्षिण में भाजपा के लिए कोई बड़ी उमीद नहीं थी, और यही बात वृक्वरत्तर के लिए भी कही जा सकती है, इसलिए हांग की चर्चा जरूरी नहीं है। शेष तीन राज्यों में भाजपा और कांग्रेस आमने-सामने थी, यह नुनाव भाजपा ने मोदी जी के चेहरे पर लड़ा और वहां के मतदाताओं ने मोदी जी की गारंटी पर अपरोक्ष दिखाया। लगातार पिछले 30 वर्षों से राजस्थान में एक बार भाजपा, तो एक बार कांग्रेस को सत्तारूढ़ होने का जनता मौका देती ही है, फिर भी कांग्रेस अपनी प्री की रेविड्यों, लोकलुभावन घोषणाओं में अपनेलिए जीत ढूँढ़ी थी, जबकि भाजपा ने कांग्रेस के वुशासन, प्रिष्ठिकरण की राजनीति और भ्रष्टाचार को मुद्दा नाया। लोगोंने दोनों दलों की बातों को अनुभव की कसौटी पर कसा और प्री की रेविड्यों के जोर और सत्ताहथियाने निकली कांग्रेस के हवा-हवाई धरवे को दरकिनार कर दिया। वहीं छत्तीसगढ़ में भाजपा ने इस बार जब अपना चुनाव अधियान गुरु किया, उसे भूपेश बघेल सरकार की कक्षान-समर्थक, आदिवासी-समर्थक और लोकलुभावन गोजनाओं का मुकाबला करने की कठिन नुसूनी का सामना करना पड़ा, ऐसा लग रहा कि कांटे की टक्कर होगी, कांग्रेस छत्तीसगढ़ और अपनी सत्ता बनाए रखने की उमीद कर रही थी। दोनों परस्तियों ने अपने घोषणापत्र में समाज के विभिन्न वर्गों को रियायतें देने की पेशकश



की थी। भपेश बघेल सरकार पर भ्रष्टाचार आरोप लगू, जिसने भाजपा को मौका दे दिया ट्राइबल एरिया होने के बावजूद भाजपा इतनी सीटें ला सकी। इसका सीधा सा जवाब है भजपा ने वहां पीछे अपनी पहुंच बनायी है। रही बात मात्र है कि उसने अपनी पहुंच को बदला। यदि प्रदेश की, तो कांग्रेस ने पूरी कोशिश की। शिवराज सिंह चौहान को धेरकर वह अपने लिए ग्रहता बना ले, लेकिन जनता ने बता दिया है कि वह क्यों अपने मामा से इतना प्रेम करती है? उसने फहले से भी अधिक सीटें देकर भाजपा को सत्ता-सदन की चाबी सौंप दी। 2018 के चुनाव में भाजपा को मध्य प्रदेश में ढार का सामना करना पड़ा था, क्योंकि उस वर्त एमपी ग्रामीण विधानसभा क्षेत्रों की सीटों में कमी हो थी। हालांकि, इसके एक साल पहले 2017 के गुजरात में भी यही स्थिति देखने को मिली थी। लेकिन तब शहरी क्षेत्रों में वोट प्रतिशत के कानून सरकार बच गई थी। इस बार मध्य प्रदेश की भाजपा ने शहरी के साथ-साथ ग्रामीण विधानसभा क्षेत्रों की सीटों में इजाफा किया। मध्य प्रदेश में भाजपा ने 75 फीसदी तक वोट ग्रामीण क्षेत्रों से हासिल किया, जो पिछले विधानसभा चुनाव में शून्य था। मोदी जी के कार्य हैं और जिस तरह से उन्होंने अपनी पार्टी की गयी बों के बीच बनायी है, उससे अब प्रदेश के इनकम्प्लेन्सी पैक्टर उभर कर आया है। अब

कोई पापा अच्छा काम कर रही है, प्राप्ति काम हो रहे हैं, तो जनता उसे डिरेल नहीं कर चाहती। तेलगाना में भी भाजपा ने बहुत सुध किया है और शायद अगली बार शायद वहाँ जीत हासिल कर पाएँ। मोदी जी की गारंटी यह है कि जनता जानती है, मोदी जी ने जो भी बादे किया है वह पूरे किए। यही पैटर्न उन्होंने गुजरात व मुख्यमंत्री रहते हुए अपनाया था। आपको एवं वाकया याद दिला दूँ, जब कांग्रेस ने वहाँ लोकों को लभाने के लिए मकान के वायदे किए तो रजिस्ट्रेशन भी करवाने लगे कि वे जैसे ही सभी में आएंगे, मकान देंगे। लोगों ने फिर भी कांग्रेस को बोट नहीं दिया। कांग्रेस की विश्वसनीयता नहीं है की वह बादे पूरा करे, ऊपर से भ्रष्टाचार के आरोप परन्तु मोदी जी की पूरी गारंटी है वह जो बोलते हैं, वो करते हैं। अगर वह बोलते हैं इकोनॉमी ५ ट्रिलियन की होगी, समृद्धि होगी वैसा होता है। यह पूरी दुनिया देख रही है। अब वह शांति की, विकास की बातें करते आतंकवाद के खिलाफ बोलते हैं, तो विलुप्ति वैसी ही होता है। भाजपा ने एक मॉडल बनाया है, जिसमें विकास प्राथमिक है। आप कोई फोल्ड देख लें। चाहे सड़क हो, वाटरजेव तक एयरपोर्ट हों, आप वृछ भी देखे और यह चीज़ सबके सामने है। सबसे बड़ी बात ये है कि गर्भ जो हैं, जो आज पीएम मोदी जी से खुद को जे-

रह है। सरकार का कल्याणकारी योजनाएं गरीबों तक पहुँच रही हैं। आपने देखा कि किस तरह सरकार ने पांच साल के लिए अनाज बाली योजना बढ़ा दी। वह अपने आप में बहुत बड़ा काम है, इसके अलावा अनेकों योजनाएं गरीबों के लिए चल रही हैं। इसीलिए, मोदी की गांवटी का मतलब है कि उन्होंने जो वादा किया, पूरा किया। विकास होगा ही। प्रधानमंत्री मोदी जी विकास का सबसे बड़ा चेहरा बनकर उभेरे हैं। वह जब भी बोलते हैं, देश की प्रगति के बारे में बात करते हैं, देश को सशर्त बनाने की बात करते हैं। वह विकास-पुरुष के तौर पर लोगों के मन में है। मोदी जी मतलब केवल हाड़मांस का पुतला नहीं, वह विकास की एक विचारधारा है। तो, वही विचारधारा जो है, वह हरेक जगह दिखनी चाहिए। इसलिए आपको किसी भी चुनाव में मोदीजी का चेहरा ही दिखेगा। एंडोंडा ही वही है। मोदी मतलब विकास, भाजपा का वही एंडोंडा ही है। इसलिए, आपको हरेक जगह विकास मिलेगा। विपक्ष भले ही आलोचना कर ले, लेकिन क्या वह एक वैकल्पिक चेहरा ला पायी है, जो मोदीजी का मुकाबला कर सके? भाजपा एक अनुशासित पाटा है। वहां हमेशा कोई न कोई चेहरा रहा है। एक समय वाजपेयीजी और आडवाणीजी चेहरा थे। अटलजी विकासपुरुष बनकर उभरे थे, जब उन्होंने नदीजोड़ योजना या फिर स्वर्णम चतुर्भुज योजना की बात की। देखा जाए, तो कोशिश को अब संभल जाना चाहिए। राहुल गांधी केवल मोदीजी को, भाजपा को गाली देते हैं, समाज को बांटने का प्रयास करते हैं। भारत की जनता बहुत समझदार है। वह सिर्प आलोचना करने के लिए भाजपा का विरोध न करे। उसे यह समझना होगा कि आज की जनता सब चुल्छ जानती है। कांग्रेस आत्मचिन करे और देश की प्रगति के बारे में बात करे, कोई मॉडल बनाएं। ताकि देश की प्रगति हो, राजनीति का स्तर ऊंचा हो, केवल गुस्सा और गालीगलौज नहीं हो। 2024 का लोकसभा चुनाव अब सिर्प चार पांच महीने दूर है।

c

यानी पास नहीं था। खैर, मिर्ज़ा ग़ालिब वर्ष 1827 में दिल्ली से उर्दू शायरी ग़ालिब के बिना अधूरी है। “उनके देखे से जो ल

१०३

लालजयी शेर कहते हैं। कौन सा हिन्दुस्तानी होगा जिन्हें गालिब साहब के कहे “हजारों ऊँचाहिंशे ऐसे, कि हर ऊँचाहिंश पर दम निकले, बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले..” और “हमको मालूम है जन्मत की हकीकत, लेकिन, दिल के खुश रखने को गालिब ये ख्याल अच्छा है..” जैसे शरों को सुन-सुनकर आनंद ना मिलता हो। गालिब अपनी शायरी में वे सारे दुख, तकलीफ और त्रासदियों का जिक्र करते हैं जिससे वे महान शायर बनते हैं। लगता है कि गालिब में भी एक आम आदमी की कई कमज़ोरियाँ थीं। गालिब ने अपने जीवन में भी कई दुःख देखे। उनके सात बच्चे थे लेकिन सातों की मृत्यु हो गई थी। उनकी माली हालत तो कभी बहुत बेहतर नहीं रही। वे जीवनभर किराए के घर में ही रहे। दिल्ली-6 में जहाँ गालिब की यादगार बनी है, वे वहां पर ही वे एक किराए के घर में रहते थे। वे मशहूर तो अपने जीवनकाल में हो गए थे, पर पर्याप्त पैसा उनके

कोलकाता गए थे। वे दिल्ली से कोलकाता जाते वह कानपुर, लखनऊ, बाँदा, इलाहाबाद होते हुए बनारस पहुँचे। वे बनारस में छह महीने ठहरे। वहां गालिब दिल्ली और दिल्ली के अपने दोस्तों को भी बड़ी शिक्षण साथ याद किया। गालिब लिखते हैं कि जब से क्रिस्मस उन्हें दिल्ली से बाहर निकाल दिया है, उनके जीवन एक तूफान उठ खड़ा हुआ है। अब न कोई उनका हमद है न ही उनका कोई वर्तन है। अपने उसी बनारस प्रवास के दौरान गालिब ने बनारस के बारे में फ़ारसी में एक प्रसिद्ध मसनवी की रचना की, जिसे 'चिराग-ए-दैर' नाम से जाना जाता है। मसनवी उर्दू कविता का ही एक रूप जिसमें कहानी क्रिस्से रचे जाते हैं। गालिब ने अपने इस मसनवी में बनारस के तमाम रंगों और विविध छटाओं को बखूबी उकरा है। गालिब 29 नंबर 1821 को वापस अपने शहर दिल्ली आ गए। उसके बाद उनका बल्लीमरान के घर में फिर से दोस्तों आना-जाना चालू गया। उनका शेष जीवन दिल्ली की गलियों में ही गुजरा

आ जाती है मूँह पर रौनक, वो समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है...'' अब भी गालिब की शायरी के शैदाईं इस शेर को बार-बार पढ़ते हैं। उनका एक और शेर पढ़ें। ''रोने से और इश्क में बेवाक हो गए...ध्याएं गए हम इतने कि बस पाक हो गए...''। गालिब के बुल 11 हजार से अधिक शेर जमा किये जा सकते हैं। उनके खतों की तादाद 800 के करीब थी। वे फकड़ शायर थे। गालिब के हर शेर और शायरी में वुछ अपना सा दर्द उभरता है। पर गालिब तब लगभग चुप क्यों थे जब दिल्ली में पहली जांगे आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी। 11 मई, 1857 को मेरठ में अंग्रेजों को रौदने के बाद बागी सिपाही पहले हिडन और फिर यमुना नदी को नावों से पार करके सलीमगढ़ के रास्ते भौं में ही दिल्ली में दाखिल हो गए थे। इनके निशाने पर यहां पर काम कर रहे गोरे और ईसाई बन गए हिन्दुस्तानी थे। ये सब उस दौर में दिल्ली के दिल दरियापंज माकों संख्या में रहते थे। बागियों ने जामा मस्तिजद के उर्दू बाजार में स्थित दिल्ली बैंक को

10

કુલાયા રા

यहाँ बिकत ह सवाधिक फोटो
फोन...और बनी रहेगी मांग

मारत है। जहां पूरी दुनिया में स्मार्टफोन की मांग लगातार बढ़ रही है, वहीं भारत में फीचर फोन अब भी उन लोगों की पहली पसंद हैं, जो महंगे स्मार्टफोन नहीं खरीद सकते। सिंगापुर, ताईवान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों ने 2जी नेटवर्क को अलविदा कह दिया है, पर अपने यहां 2जी नेटवर्क के सहारे साधारण फीचर फोन कम कीमत, ज्यादा बैटरी लाइफ, संगीत सुनने की सुविधा व बेसिक इंटरनेट सेवा के साथ लोगों को ऑनलाइन जोड़ रहा है। फीचर फोन से तात्पर्य उन मोबाइल फोन से है, जिनका प्रयोग वॉयस कॉलिंग और टेक्स्ट मैसेज के लिए किया जाता है। इनमें बेसिक मल्टी मीडिया सुविधा भी होती है, जिससे ऑडियो-वीडियो सुविधाओं का आनंद उठाया जा सकता है। ये बहुत कम कीमत में उपलब्ध हैं। जबकि स्मार्टफोन इंटरनेट आधारित हैं, जो बात करने के अलाया, इंटरनेट की दुनिया में एप सुविधाओं के साथ असीमित विकल्प देते हैं। ये फीचर फोन के मुकाबले महंगे होते हैं और इनकी परिचालन कीमत भी महंगी होती है। वैसे भी देखा गया है कि शहरों में आजकल लोग दो फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं-बात करने के लिए साधारण फीचर फोन और इंटरनेट इस्तेमाल करने के लिए स्मार्टफोन। स्टेटिस्टिकों की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में, भारत में फीचर फोन बाजार से उत्पन्न राजस्व आश्चर्यजनक रूप से 2.2 अरब अमेरिकी डॉलर होगा। यह दुनिया भर में सबसे ज्यादा होगा। साइबरमीडिया रिसर्च (सीएमआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के फीचर फोन बाजार में 2023 की दूसरी तिमाही में उल्लेखनीय बृद्धि देखी गई। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि 2जी फीचर फोन शिपमेंट की बृद्धि स्थिर रही, जबकि 4जी शिपमेंट पर्सनलिटीज़ में घेटो न्यूज़ देखी गई।

ANSWER

100

अपक्रान्त द्वारा संपर्क की जापात, इस माहौल को बदलने की दरकार राजस्थान का कोटा शहर मशहूर है अपने कोचिंग सेंटरों के लिए जो जॉर्डन और टीम ऐरिया

प्रतिस्पर्धी परीक्षा

के एक परशान करने वाले आंकड़ों का गूज़ 2023 में दश भर में सुनाइ दी, जो युवा दिमागों पर शैक्षणिक दबाव के कष्टदायक असर को भी याद दिलाते हैं। सिर्फ़ 2023 में शहर में करीब 28 छात्रों ने आत्महत्या की, जो इसका प्रतीक है कि उच्च प्रतिस्पर्धी माहौल में युवाओं के सपने किस तरह अक्षम्य वास्तविकता से टकराते हैं। यह आंकड़ा कोचिंग संस्थानों की पारिस्थितिकी में निहित जटिलताओं को रेखांकित करता है और बताता है कि ये कैसे देश की शैक्षिक व्यवस्था में गुणी हुए हैं। भारत में ज्यादातर 12वीं कक्षा के छात्रों की कहानी सिफ़र दो महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाओं में सफलता की खोज तक सीमित है। विशिष्ट इंजीनियरिंग संस्थानों के लिए जेर्डी और प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेजों के लिए नीट परीक्षा। उम्मीदवारों की संख्या और उपलब्ध सीटों के बीच भारी असमानता, जो दस फीसदी से भी कम है, इन परीक्षाओं में प्रतिस्पर्धा को कई गुना बढ़ा देती है। इससे एक ऐसे माहौल को बढ़ावा भी मिलता है, जहां दबाव पनपता है और छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है। पिछले कई वर्षों के आंकड़े बताते हैं कि कोटा के प्रेशर कुकर माहौल में छात्रों की आत्महत्या की घटनाओं में किस तरह बढ़ि दृढ़ हुई है। 2022 में 15, 2019 में 18 और 2018 में 20 छात्रों ने आत्महत्या की थी। इस उच्च जोखिम वाले परिदृश्य के बीच राज्य की भूमिका पर भी सवाल उठते हैं। अपेक्षाकृत कमज़ोर वर्ग के बच्चों को कोचिंग देने के लिए विभिन्न कोचिंग संस्थानों के साथ सहयोग अनजाने में इन पृथक केंद्रों के अस्तित्व और कथित जरूरत को मजबूत करता है, जिससे युवाओं के दिमाग पर तनाव और बढ़ता जाता है। नए वर्ष की शुरुआत हमें आत्मनिरीक्षण और पुनर्मूल्यांकन का अवसर दे रही है। कोचिंग संस्थानों का विनियमन किया जाना जरूरी है, लेकिन उतना ही जरूरी है अभिभावक और समाज की तरफ से पड़ने वाले दबाव को कम करना, जो राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्ल्यूरो के अनुसार भी छात्रों को आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का सबसे बड़ा कारण है। 'प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है', का मंत्र केवल बयानबाजी तक सीमित नहीं रहना चाहिए, इसे सामाजिक व्यवहार का आधार बनाने की जरूरत है। इसके लिए जरूरी है कि एक समावेशी शैक्षिक परिदृश्य का निर्माण हो, ताकि छात्रों पर बेवजह दबाव न हो। वर्ष 2024 की शुरुआत ऐसे शैक्षिक बातावरण को बनाने के संकल्प से होनी चाहिए, जिसमें विविध प्रतिभाओं को पनपने का अवसर मिल सके और हर बच्चा अपनी विशिष्टता के अनुसार कैरिअर का चुनाव कर सके। यह महत्वपूर्ण क्षण एक परिवर्तनकारी यात्रा की शुरुआत का भी समय होना चाहिए, जिसमें शिक्षा कुछ प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की संकीर्ण सीमाओं को पार करती हो, क्योंकि ऐसा होने पर ही युवा अपने जातिविवर ज्ञेय से दूरी रख सकते।



झारखण्ड वासियों को नए
साल की हार्दिक बधाई
एवं शुभकामनाएं।
नया साल सभी के लिए
सुख, समृद्धि और
खुशहाली लाएं।
देश में अमन-चैन कायम
रहे, भाईचारा सौहार्द
बनी रहे।

हमारा संकल्प

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण और हित से जुड़े कार्यों के लिए तत्पर होते हैं। नए साल में उनके मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं। निश्चित तौर पर नया साल सभी के जीवन में एक नई ऊर्जा के संघर की तरफ होता है। नई उमंग और आत्मविश्वास के साथ प्रेरणा स्रोत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के संकल्प को पूरा करना ही हमारा संकल्प है। जिसमें उन्होंने भारत को विकसित देश बनाना और आत्मनिर्भर बनाना तय किया है।

निवेदक
बाबूधन गुर्जू

भाजपा नेता सह पूर्व जिला
परिषद् अध्यक्ष, पाकड़।

